



ISSN 2394-53

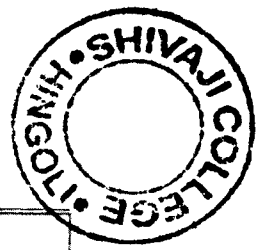
# printing<sup>®</sup> Area

Peer Reviewed International Refereed Research Journal



Principal  
Shivaji College, Hingoli  
Ta. Dist. Hingoli (MS)

Editor  
Dr. Bapu G. Gholap



- 39) विवाह के प्रति बदलती अवधारणा एवं आधुनिक हिन्दी उपन्यास एक अध्ययन  
प्रा. सुनील एस कांबळे ||165
- 40) ऐतिहासिक कानून के रूप में सूचना का अधिकार  
डॉ० राजीव रैशन, पो०—समस्तीपुर, (बिहार) ||169
- 41) वागपत जनपद में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण में शिक्षा के अधिकार ...  
डॉ० नवीनता रानी, मोदीनगर ||174
- 42) आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संकट  
पी० एल० शाह, डॉ० एम० के० टम्टा, गोपेश्वर (चमोली) ||181
- 43) हिमालयी राज्यों की जनजातियाँ और राष्ट्रीय सुरक्षा में उनकी भूमिका  
डॉ० एम० के० टम्टा, चमोली (उत्तराखण्ड) ||185

  
Principal  
Shivaji College, Hingoli  
Tq. Dist. Hingoli (MS)

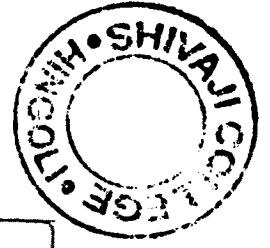
ISSN: 2394 5303

Impact  
Factor  
7.891(IIJIF)

*Printing Area*<sup>®</sup>  
Peer-Reviewed International Journal

September 2021  
Issue-80, Vol-02

01



आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

# प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research  
Journal in Marathi, Hindi & English Languages

September 2021, Issue-80, Vol-02

**Editor**

**Dr. Babu g. Gholap**

(M.A.Mar.& Pol.Sci., B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana  
Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd., At.Post.  
Limbaganesh Dist, Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat."



**Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

At.Post.Limbaganesh, Tq. Dist Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695.09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com. vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book, Publisher & Distributors

**Principal**

Shivaji College, Hingoli  
Tq.Dist.Hingoli (MS)



संबंधों का मार्गदर्शन करना चाहिए, यही स्वीकार करने में है कि युद्ध अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का कोई समाधान नहीं है। इनके अनुसार उचित शिक्षा के माध्यम से ही प्रत्येक समुदाय सुदृढ़ एवं समृद्ध हो सकता है। आज विश्व के सामने आतंकवाद एक चुनौती के रूप में है। ऐसे में राष्ट्रीय संघर्षों को दूर करने के लिए यदि टैगोर के विश्ववन्धुत्व की भावना के विचारों को आत्मसात किया जाए तो हम युद्ध तथा हिंसा जैसी प्रवृत्तियों से मुक्त होने में सफल हो सकेंगे।

शिक्षा देश के भविष्य की नींव है और उसे मजबूत करने में कौताही हुई है। शिक्षा में सुधार का कार्य इतना बड़ा था किंतु उसे राष्ट्रीय चुनौती के रूप में स्वीकार नहीं किया गया और उसे जितनी प्राथमिकता मिलनी चाहिए थी उतनी नहीं मिली। आज शिक्षा के क्षेत्र में दिशाहीनता व्याप्त है। युद्ध, हिंसा, मृत्युहीनता और भौतिकवादी आँधी से ब्रह्म मानवता को उसके विभिन्न, वर्तमान और अंधकारमय भविष्य में मार्गनिर्देशन करना आशादीप बन सकता है। इनके विचार वर्तमान शिक्षा के दोषों का निवारण करके आदर्श शिक्षा प्रणाली की संरचना में सार्थक योगदान दे सकता है। अतः इनके विचार व प्रयोग आज के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

#### सन्दर्भ ग्रन्थ —

1. अल्तेकर (१९६८) — प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, चोम फाटक, वाराणसी
2. ओड एल.के. (२००६) — शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
3. चौबे, मरयु प्रसाद (१९६३) — भारत के कुछ शिक्षा दार्शनिक, राम नारायण लाल बेनी माधव, इलाहाबाद
4. जयसवाल, सीताराम (१९६७) — शिक्षा दर्शन, पुस्तक प्रकाशन, लखनऊ
5. डॉ. शुक्ला, सी.एम. (२००९) — शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, अनुभव पब्लिसिंग हाउस, इलाहाबाद
6. ठाकूर, रविन्द्रनाथ (२०००) — रविन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन, अरुण प्रकाशन, दिल्ली
7. लाल, रमन विहागी (२००७) — शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, रम्यांगी पब्लिकेशन, मेरठ

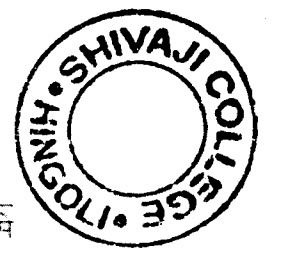
विवाह के प्रति बदलती अवधारणा एवं आधुनिक हिन्दी उपन्यास : एक अध्ययन

प्रा. सुनील एस कांबळे

हिन्दी विभाग, शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली  
संशोधन केंद्र : आदर्श महाविद्यालय, हिंगोली

प्रस्तावना :- साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में घटने वाली घटनाएँ व नास्तिकता सामाजिक दृष्टिकोण साहित्य के माध्यम से प्रतिबिम्बित होते हैं। प्रसूत लेखकों के माध्यम से विवाह के प्रति बदलते सामाजिक दृष्टिकोण व उसके हिन्दी के उपन्यासों में अभिव्यक्त होने की प्रवृत्ति को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। आधुनिक समाज में विवाह के प्रति युवाओं की मानसिकता बदल रही है। भारतीय दर्शन में विवाह को जन्म-जन्मांतर का बंधन माना गया है किंतु आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ये बंधन अटूट नहीं है। आज के युवा पर व्यक्तिवादी चिंतन हावी है। वह विवाह को भी आत्मिक संबंध न मानकर जीवन की भौतिक उन्नति का एक साधन मानता है। इस प्रकार की मानसिकता न सिर्फ उस युग के जीवन संघर्ष का कारण बनती है अपितु उसके परिवार वालों को भी संघर्ष में डाल देती है। इन बदलते मूल्यों व परिवेश का चित्रण समकालीन उपन्यासकारों ने विभिन्न रूपों में किया है। इस चित्रण में दो बाने प्रमुख रूप से उभर कर आती हैं। प्रथम यह कि कैरियर विवाह के उच्च प्राथमिकता पा रहा है और विवाह की अनिवार्यता को स्त्री व पुरुष समान रूप से नकार रहे हैं। दूसरा विवाह को भौतिक साधनों की प्राप्ति को सीधे नकार रहे





वाद का एक पात्र गुरु स्वच्छंद प्रेम में विश्वास कर विवाह नहीं करता। वह कहीं भी टिककर नहीं रहता। उसकी आवागामी व भटकन उसके मानसिक अंतर्द्वन्द अस्थिरता का प्रतीक है। गुरु का मित्र भट्ट गुरु के भविष्य के बारे में चिंतित होकर सोचना है, अंत में तो वह निपट अकेला रह जाएगा, बुढ़ापा बीमारी क्या किसी को छोड़ने है? तब कौन देखेगा उसे? आखिर सामाज की रचना और शादी वगैरह नियम सोच-समझकर ही तो बनाए गए है। यह आवागमन अंततः उसे कहां ले जाएगा।

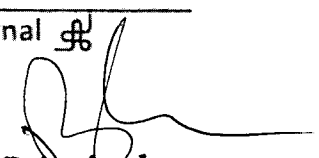
विवाह व्यक्ति के कैरियर व विकास में बाधक है यह धारणा सिर्फ नारी में ही नहीं होती है अपितु कई बार पुरुष भी विवाह की स्वतंत्रता की गह का एक गेड़ा मानने लगता है। आधुनिक युग में जब बिना विवाह किए ही पुरुष को सभी प्रकार के भौतिक सुख हासिल होने लगने हैं तो उसे, विवाह एक अनावश्यक प्रक्रिया नजर आती है। अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए वह नारी विरोधी तक बन जाता है। मानसिक रूप से असंतुलित ऐसे ही एक युवा का चित्रण पंकज विष्ट ने अपने उपन्यास पंखवाली नाव में किया है जहां युवा अविवाहित अनुपम अपने मित्र से कहता है, औरतें जोक की तरह होती है। जरूरत से ज्यादा अटेंशन मांगती है और जरूरत से ज्यादा अटेंशन आपको देती है। डिपेंडेंस ऐसी कि बिना सहारे के न एक कदम खुद चलेगी न ही चलने देगी। इट्स मेड माइंड कंट्रोल मैकेनिज्म।

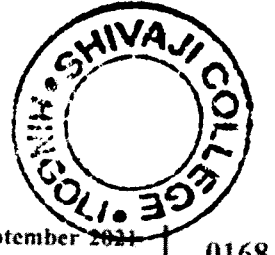
वस्तुतः इस प्रकार के गण विचार तत्कालिक स्वतंत्रता भले ही दें, व्यक्ति के सर्वांगीण संतुलित विकास के लिए ये अत्यंत घातक है। विवाह सिर्फ शारीरिक सुख या संतान प्राप्ति के लिए नहीं होता है। यह जीवन को एक निश्चित दिशा व प्रभाव देता है जो आत्मिक सुख के साथ-साथ व्यक्ति को समाजिक रूप से भी संतुष्ट व सुखी रखता है।

आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में प्रमुख रूप से चर्चित गोविन्द मिश्र के उपन्यास "पाँच आंगनों वाला घर", सुमन्द्र वर्मा के चर्चित उपन्यास "मुझे चाँद चाहिए", पंकज विष्ट के उपन्यास पंख वाली नाव और अलका सगवगी के उपन्यास एक ब्रेक के बाद आदि पर उपर्युक्त विवेचन से इस बात की पुष्टि होती है कि आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में विवाह के प्रति बदलती धारणा को पूरी शिद्दत के साथ रेखांकित किया जा रहा है। आधुनिक समाज में दो तरह के द्रंद दिखाई देते हैं, एक वह है, जो पारंपरिक शैली और विवाह के प्रति धारणाएँ रखता है। दूसरा वर्ग उन परिवारों का है, जो बदलते परिदृश्य और परिवेश में बदलती सोच का परिचायक है। यह वर्ग विवाह के प्रति प्राचीन धारणाओं को अस्वीकार करता है। अब विवाह के सम्बंध में जो निर्णय परिवार के द्वाय लिए जाते थे, उनके स्थान पर स्वयं पुरुष और महिला दोनों मिलकर आपसी समझ के आधार पर लेने में विश्वास करते है। पारंपरिक पद्धति में विश्वास करने वाले आज भी उन्हीं रूढ़ियों से प्रभु दिखाई देते है, जो परंपरा से चली आ रही है। समय-समय पर थोड़ा बहुत बदलाव अवश्य दिखाई देता है, किन्तु धारणाएँ नहीं बदली है।

यह वर्ग आधुनिक शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति से गहरे तक प्रभावित है। माता और पिता के द्वाय विवाह के प्रति जो धारणाएँ समाज में विद्यमान है, वे नई पीढ़ी को स्वीकार नहीं है। वे चाहते है कि उन्हें ही पूरा जीवन साथ निभाना है। वेमेल समझौता करना उचित नहीं है, इसलिए आपसी समझ और मानसिक आधार पर आजकल विवाह किए जाते है। यह परिवर्तन समाज के लिए उचित और आवश्यक है।

समाज में जो कुछ भी परिवर्तन होते है, वे साहित्य में सीधे तौर पर दिखाई देते है। आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में विवाह के प्रति बदलती धारणा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जो कि उपन्यासकारों के

  
Principal  
Shivaji College, Hingoli  
Tq. Dist. Hingoli (MS)



ISSN: 2394 5303

Impact Factor 7.891 (ISI)

Printing Area® Peer-Reviewed International Journal

September 2021 Issue-80, Vol-02

0168

40

## ऐतिहासिक कानून के रूप में सूचना का अधिकार

डॉ० राजीव रौशन

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग  
आर०एन०ए०आर० कॉलेज, समस्तीपुर  
पो०—समस्तीपुर, (बिहार)

परिवर्तित सोच की परिचायक है। आधुनिक युग में विवाह संस्था के औचित्य पर लगने वाले प्रश्न चिन्ह ही व्यक्ति के संघर्ष का कारण है। विवाह के प्रति अनास्था व्यक्ति के जीवन में अकेलापन व भावात्मक शून्यता भर देती है जो उसके जीवन संघर्ष को बढ़ाती है।

**निष्कर्ष :-**

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में विवाह के प्रति धारणाएँ बदल रही हैं। वर्तमान समय में जीवन एक संघर्ष जैसा ही हो गया है। इसलिए नब्बे के दशक के बाद भारतीय समाज में तीव्रगामी परिवर्तन आए हैं। ये परिवर्तन विवाह के प्रति नई पीढ़ी के दृष्टिकोण में भी परिलक्षित हो रहे हैं। इस बदलाव को समकालीन उपन्यासकारों ने विभिन्न रूपों में चित्रित किया है। इस बदलाव ने एक ओर जहाँ संघर्ष की स्थिति निर्मित की वहीं दूसरी ओर नए वैवाहिक मूल्यों व प्रतिमानों को विकसित करने की जरूरत पर भी प्रकाश डाला। वस्तुतः प्रेम विश्वास, - आत्मीयता व स्थायीत्व जैसे मूल्यों को बनाए रखने हुए विवाह के प्रति नवीन उदार दृष्टिकोण विकसित करना ही आज के समय व समाज की जरूरत है जो जीवन संघर्ष को कम कर सकता है।

**संदर्भ :**

- (१) सुंदर वर्मा, मुझे चांद चाहिए, पृष्ठ संख्या ८६
- (२) गोविंद मिश्र, पांच आंगनों वाला घर पृष्ठ संख्या २१७.
- (३) अलका सगवगी, एक ब्रेक के बाद पृष्ठ १८४
- (४) पंकज मिश्र, पंखवाली नांव, पृष्ठ संख्या ८५

### शोध—सारांश

भारतीय लोकतंत्र में सूचना का अधिकार का २००५ नागरिकों के लिए एक ऐतिहासिक कदम। यह आम नागरिकों को सरकारी नीतियों, विभागों प्रशासन की कार्य-प्रणालियों से पूर्णतः परिचित है। यह प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों अपने कार्य के प्रति उत्तरदायी व जवाबदेह बनाने इस कानून के माध्यम से आम नागरिकों को एकता व अखण्डता एवं सुरक्षा सम्बन्धी समस्याओं छोड़कर लोक कल्याणकारी योजनाओं, सरकारी अभिलेखों, दस्तावेजों, आदेशों इत्यादि से सरकारी सूचनाएँ आसानी से प्राप्त कर सकता है। कानून बनने के बावजूद भी लोगों को बेवजह सुरक्षा का हवाला देकर बहुत सारी सूचनाएँ छुपाई जाती है या जानबूझकर सूचना देने में देरी कर दी है। केन्द्र सरकार, राज्य सरकार व स्थानीय सरकार को प्रशासन पर नकैल करने को बाध्य करती है ताकि सूचना के अधिकार के माध्यम से प्रशासन पद्धति की स्थापना कर प्रशासन को सुचारु से चलाया जा सके।

**की वर्ड—** भारतीय लोकतंत्र, आम नागरिक

### विषय प्रवेश (Introduction)

सूचना का अधिकार अभिनियम वास्तव में एक ऐतिहासिक विधान है। यह लोगों के लिए सूचना का कानून है, जो मना एक